लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या:3; जुलाई-दिसंबर, 2021

भीखमंगा

✍ धृति बरा

वह तुम्हारी तरह संतुष्टि के लिए नहीं तड़पता,
वह तो तीन वक्त की रोटी के लिए तड़पता है।

संतुष्टि मिले न मिले,
बस किसी तरह इस भूखी जंग से
थोड़े बचाव मिले।
तुम्हारा झूठा खाकर भी वह सुखी होगा,
न की तुम्हारी तरह
बेमुफ्त खाना मिलने पर भी असंतुष्ट होगा।

रात को जितनी भी बारिश हो,
तुम तो मज़े से सो जाओगे!
और उनका क्या?
जिनके ऊपर रात काटने का एक सहारा तक नहीं...

ठंड की काँपती जार में
हमें तो कपड़ों के ऊपर कपड़े लेने की आदत है,
पर उनका क्या?
जिन्हें कड़कती ठंड में एक कपड़ा तक नसीब नहीं होता...

उनके लिए मन की तृप्ति का प्रश्न नहीं आता
इसे तो वे जानते ही नहीं,
उनमें तो सिर्फ जीवन-रक्षा का बोध है।

तृप्ति,संतुष्टि,लाज,सम्मान ये तो बड़े लोगों की बातें है...
इन्हें तो भूख,ठंड और रात गुजारने भर की चिंता सताती है।

संपर्क-सूत्र:
हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय